हिन्दी कहानी का विकास

डॉ० - अंजु
वैशाली महिला महाविद्यालय

हिन्दी कहानियों का इतिहास भारत में सदियों पुराना है। प्राचीन काल से कहानियाँ भारत में बोली सुनी और लिखी जा रही है। ये कहानियाँ ही है जो हमें हिम्मत से भर देता है और हम असंभव कार्य को भी करने को तैयार हो जाते है और अनेकों कठिनाईयों के बावजूद ज्यादातर कार्य पूरे भी हो जाते हैं। हिन्दी कहानी हिन्दी साहित्य की प्रमुख कथात्मक विधा है। आधुनिक हिन्दी कहानी का आरंभ 20वीं सदी में हुआ। पिछले एक सदी में हिन्दी कहानी ने आदर्शवाद, यथार्थवाद, प्रगतिवाद, मनोविश्लेषणवाद, आँचलिकता आदि के दौर से गुजरते हुए सुदीर्घ यात्रा में कई उपलब्धियाँ हासिल की है।

कहानी के तत्वों की पर्याप्त उपस्थिति के आधार पर हिन्दी कहानियों के वर्गीकरण की श्रृंखला में हिन्दी की पहली कहानी का प्रश्न विवाद ग्रस्त है। सबसे प्राचीन कहानियों में कालक्रम की दृष्टि से सैयद इंशा अल्लाह खान द्वारा 1803 या 1808 ईस्वी में रचित 'रानी केतकी की कहानी' जहाँ मध्यकालीन

किस्म की किस्सागोई मात्र है। जो पारसी थियेटर के लटकों-झटकों से भरी है वही 1871 ईस्वी में अमेरिकी पादरी रेवरेंड जे न्यूटन द्वारा रचित कहानी "एक जमींदार का दृष्टांत आदर्शवादी धर्म प्रचार के दृष्टिकोणानुमुख आंतरिक संरचना की दृष्टि से कमजोर रचना है। इसी क्रम में किशोरी लाल गोस्वामी की 'प्रणयिनी परिणय', राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द की 'राजा भोज का सपना', भारतेन्दु हरिश्चंद्र कृत 'एक अद्भुत स्वप्न' भी अपने परंपरागत स्वरूप के कारण कहानी की कसौटी पर खरी नहीं उतरती। बीसवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में 'सरस्वती' तथा अन्य पत्रिकाओं में प्रकाशित किशोरी लाल गोस्वामी कृत 'इंदुमती', माधवराव सप्रे द्वारा रचित 'एक टोकरी भर मिट्टी' आचार्य रामचंद्र शुक्ल कृत 'ग्यारह वर्ष का समय' तथा राजेन्द्रबाला घोष 'बंग महिला' द्वारा रचित 'दुलाईवाली' आदि कहानियों की गिनती भी हिन्दी की पहली कहानी मानते हैं कि वह किसी बंगला कहानी की छाया ना हो। ~~बाद के~~

वस्तुतः ~~सन~~ ~~1~~ हिन्दी कहानी के विकास को समझने के उसको विभिन्न चरणों में बाँटकर देखा जा सकता है।

विकास का पहला दौर

वस्तुतः सन 1900 ई० से 1915 ई० तक हिन्दी

WK - 07

हिन्दी कहानी के विकास का पहला दौर था। मन की चंचलता (माधव प्रसाद मिश्र) 1907 ई० गुलबहार (किशोरी लाल गोस्वामी) 1902 ई० पंडित तथा पंडितानी (गिरिजादत्त वाजपेयी) 1903 ई० ग्यारह वर्ष का समय (रामचंद्र शुक्ल) 1903 ई०, दुलाई वाली (बंगमहिला) 1907 ई० विद्या बहार (विद्यानाथ शर्मा) 1909 ई० राखीबंद भाई (वृन्दावनलाल वर्मा) 1909 ई०, ग्राम (जयशंकर प्रसाद) 1911 ई०, सुखमय जीवन (चंद्रधर शर्मा गुलेरी) 1911 ई०, रसिया बालम (जयशंकर प्रसाद) 1912 ई०, परदेसी (विश्वम्भरनाथ जिज्जा) 1912 ई०, कानों में कंगन (राजाराधिकारमण प्रसाद सिंह) 1913 ई०, रक्षाबंधन (विश्वम्भरनाथ शर्मा) 1913 ई०, उसने कहा था (चंद्रधरशर्मा गुलेरी) 1915 ई०, आदि के प्रकाशन से सिद्ध होता है इस प्रारंभिक काल में हिन्दी कहानियों के विकास के सभी चिन्ह मिल जाते हैं। 1950 ई० तक हिन्दी कहानी का एक विस्तृत दौर समाप्त हो जाता है और हिन्दी कहानी परिपक्वता के दौर में प्रवेश करती है।

शेष अगले वर्ग में

Scanned with CamScanner